

दीर्घाहन् (दी + अहन्) adj. *lange Tage habend*: निदाघ P. 8, 2, 69, Vārtt. 1, Sch. दीर्घाहो शरत् P. 8, 4, 7, Sch.

दीर्घिका (von दीर्घ) f. *ein länglicher See, ein länglicher Teich* AK. 1, 2, 28. TRIK. 1, 2, 28. H. 1092. MBh. 1, 5004. 13, 3248. HARIV. 8366. R. 3, 61, 17. Suçr. 2, 484, 19. MĪLAV. 8, 5, 33. RAGH. 16, 13. KATHĀS. 10, 166. 26, 87. VID. 284. — Vgl. त्रिदश.

दीर्घोक्तर (दीर्घ + 1. कर्) verlängern: (अद्भिः) वेगदीर्घकृतात्मा KUMĀRAS. 3, 76. *in weite Ferne führen*: दीर्घोक्तेर्युद्धमदकलं कूजितं सारसानाम् MEGH. 32.

दीर्घोभाव (vom folg.) m. *das Langwerden* (eines Vocals) VS. PAṬ. 4, 189. दीर्घोभू (दीर्घ + भू) lang werden: दीर्घोभूतं verlängert (von einem Vocale) P. 7, 4, 72, Sch.

दीर्घोर्वाह (दीर्घ + इर्वाह) m. *ein Gurkenart* (उङ्गरी) RĀGAN. im ÇKDR. 1. दीव् s. 1. दिव्. 2. दीव् (= 1. दिव्) f. (acc. युवम्, dat. दीवै und युवै) Würfelspiel: न्युप्ता अन्ता अन्तु दीव आसन् RV. 10, 27, 17. अन्ताः फलवतो युवं दत्त AV. 7, 80, 9. यो नो युवे धनमिदं चकार 109, 5.

दीवन n. *das Spielen mit Würfeln* Schol. zu KĪTJ. ÇR. 4, 9, 21, Note, Z. 5. — Vgl. देवन.

दीवि m. = किकिदीवि der blaue Holzhäher ÇĀDDAM. im ÇKDR. दीस und davon adj. दीस्य v. l. im gaṇa गवादि zu P. 5, 1, 2.

1. ड 1) intrans. डुनोति (med. s. u. आ und वि) und डूयते (ep. auch डूपति) DHĪTUP. 27, 10, 26, 24 (डू). brennen, vor innerer Hitze vergehen, sich verzehren, vor Kummer, Trauer vergehen: डुनोति चित्तं यदि तं न पश्ये MBh. 3, 10069. BHĀG. P. 3, 2, 17. मन्मथेन डुनोमि Git. 3, 9. (ब्रणाः) डूपते च त्रिदह्यते Suçr. 1, 103, 19. शीतलं वस्तिं डूपमानाय दापयेत् 2, 426, 13. डूपे विषयेव रसं हि पीत्वा MBh. 3, 1371. KUMĀRAS. 5, 12. नवपल्लवसंस्तरे ऽपि मे मृड डूपते यदङ्गमर्पितम् RAGH. 8, 56. तथा ह्रीनं विधातमी कथं पश्यन् डूपसे 1, 70, 16, 21. Git. 7, 30, 9, 11. RĪGĀ-TAR. 4, 626. डूपते मे मनः MBh. 13, 792. KUMĀRAS. 5, 48. KATHĀS. 13, 122. DAÇAK. in BRNP. ÇHR. 183, 7. डूपमानं हृदयम् ÇĀK. 127, act.: डूपामि भरतश्चेष्ट दृष्ट्वा ते धातरम् u. s. w. MBh. 4, 591. हृदयं डूपतीय मे 1, 8369. मनो हि मे डूपति (DRAUP. 6, 4 डूपते gegen das Versmaass) दह्यते च 3, 18670. हृदयेन डूपता BHĀG. P. 4, 3, 19. — 2) trans. डुनोति brennen, durch Brand Schmerzen verursachen, in innere Gluth —, in Feuer —, in Trauer versetzen, hart mitnehmen: नैनं डुन्वत्यग्र्यः AV. 9, 4, 18. स भस्मसाञ्चकाराग्निन्दुदाव (v. l. उदाव) च कृतात्तवत् BHATT. 14, 85. काममङ्गानि मे सीते डुनोतु मकरध्वजः MBh. 3, 16192. इदमुच्छसितालकं मुखं तव विश्रातकथं डुनोति माम् RAGH. 8, 54, 19, 21. VARĀH. BṆH. S. 5, 72. BHĀG. P. 3, 14, 9. BHATT. 5, 98. 6, 74. 17, 99. कर्णिकारं डुनोति निर्गन्धतया स्म चेत्: KUMĀRAS. 3, 28. KĀURAB. 32. Git. 7, 40. partic. डूनै P. 8, 2, 45. Vop. 26, 96. gebrannt, in Gluth —, in Unruhe versetzt, mitgenommen, gequält AK. 3, 2, 52. H. 1493. हूना अहूना अरूसा अरूवन् AV. 2, 31, 3. तापं Verz. d. Oxf. H. 153, b, 25. अतमशरूवन् Git. 8, 7. पितेन हूने रमने सितापि तित्तापते NAISH. 3, 94. मत्संभ्रयादिमे हूनाः सुखिनो धातरो हि मे MBh. 18, 78. डुत = पीडित ÇĀK. 6, 59; nach dem Schol. von डु, डूवति (उपतापे); vgl. SIDDH. K. zu P. 8, 2, 44, Vārtt. 2. — Vgl. दव, दाव, दोमन्. — caus. दावयति = डु trans. Verz. d. Oxf. H. 98, b, 1.

— अग्नि trans. brennen, durch Brand Schmerzen verursachen: अग्ने यो विश्रान्कृतिताम्कृणोष्युच्छेद्यपन्नमिद्विवाभिडुन्वन् AV. 5, 22, 2.

— आ intrans. sich verzehren, sich abhärmen: आडुन्वस्व विडुन्वस्व दुक्ष कृप्यस्व MBh. 1, 3289. — आहून् P. 8, 2, 44, Vārtt. 2, Sch.; nach SIDDH. K. von 2. डु.

— परि intrans. heftig brennen, sich verzehren, sich abhärmen: दह्यतीव शरीरं मे संवत्स्य तवेषुभिः । मर्माणि परिदूयते मुखं च परिप्रुष्यति MBh. 6, 5779. नैव सा लुभ्यते देवी न च स्म परिदूयते R. 2, 33, 34. मनश्च परिदूयते MBh. 3, 1136.

— प्र 1) intrans. verbrennen: तद्ययेपीकातूलमग्नौ प्रातं प्रदूयतेवैव ह्यस्य सर्वे पाप्मानः प्रदूयते KĀND. UP. 5, 24, 3 (cit. bei KULL. zu M. 6, 74); vgl. अग्नी प्रास्तं प्रदूयते तथा (l. यथा) तूलं द्विजोत्तम । तथा गङ्गावगाढस्य सर्वपापं प्रदूयते || MBh. 13, 1800. — 2) trans. quälen, beunruhigen, zusetzen: या वेदना शरीरं प्रडुनोति जज्ञोः Suçr. 1, 18, 15. प्राडुन्वन् ज्ञानुभिः BHATT. 17, 14.

— वि 1) intrans. sich verzehren, sich abhärmen: आडुन्वस्व विडुन्वस्व MBh. 1, 3289. हृदयेन विदूयता 2171 (wo so zu verbessern ist). 5045. 3, 9922. BHĀG. P. 3, 23, 49. 4, 17, 17. — 2) trans. durch Brand beschädigen, — zerstören: अग्निर्विवारब्धो वि डुनोति सर्वम् AV. 5, 18, 4. सा ब्रह्मज्ञाया वि डुनोति राष्ट्रं यत्र प्रापादि श्वा उत्कृषीमान् 17, 4.

2. डु, डूवति gehen, sich bewegen DHĀTUP. 22, 46; डुदविध, डुडुविधः अदावीत् and अदीपीत् Vop. 8, 96, 46. partic. डून SIDDH. K. zu P. 8, 2, 44, Vārtt. 2. — Vgl. डु.

डुःकर्ण s. डुष्कर्ण.

डुःखं (vom folg.), डुःखति schmerzen: अङ्गप्रत्यङ्गानि डुःखति मंधिविसंधयश्च डुःखति SADDH. P. 4, 5, a.

डुःखं (ein nach मुख gebildetes, der ältesten Sprache noch abgehendes Wort; nach einer allgemeinen Vorschrift der Grammatiker डुष्खि zu schreiben, aber in dieser Form in den Handschriften wohl selten vorkommend) ÇĀNT. 1, 6, 1) n. Unbehagen, Schmerz, Leiden AK. 1, 2, 2, 3, 3, 6, 3, 23. TRIK. 1, 2, 7 (= अघ). H. 1370. डुःखं लभेत् Einschrieb. nach RV. 10, 83. डुःखमुपयति ÇĀT. Br. 14, 7, 2, 15. M. 1, 26, 49, 4, 167. मनुष्याणां पद्मनां च डुःखाय प्रहृते सति । यथा यथा मरुदुःखं दण्डं कुर्यात्तथा तथा || 8, 286. समायुक्त 12, 28. योग 6, 64. संप्राप्नुवन्ति डुःखानि तामु तास्विक योनिषु 12, 74. शोणितेन विना डुःखं कुर्वन्काष्ठादिभिर्नरः JĀG. 2, 218. MBh. 2, 955. N. 10, 11. 12. निगृह्यात्मनो डुःखम् 22, 23. R. 1, 9, 42. Suçr. 2, 149, 10. MEGH. 108. RAGH. 3, 6. HIT. I, 11. चक्रवत्परिवर्तते डुःखानि च सुखानि च 164. °कार BRĀHMAN. 1, 23. HIT. Pr. 12. सर्वेषामनुकूलवेदनीयं मुखं प्रतिकूलवेदनीयं डुःखम् TARKAS. 53. नरामरणादिज्ञं डुःखम् KAP. 3, 53. SĀMUKJAK. 55. °त्रय 1. TATTVAS. Eidl. तेन डुःखेन रोदिमि VET. 23, 1. पित्रोस्तु डुःखिनोऽर्द्धात्पतत्यश्चयो भुवि ÇĀK. 40, 14. (पुत्रः) यः पितृडुःखाय वर्तते 42, 7. तनयाविश्लेषं ÇĀK. 81. अनुशयं 134. नैराश्यं VID. 260. क्लेशितः कर्मडुःखैः ÇRĀGĀT. 12. Am Ende eines adj. comp. f. आः समडुःखामिव कुर्वती स्थलीम् KUMĀRAS. 4, 4. Personif. ein Kind des Naraka und der Vedanā VP. 36. डुःखेन mit Mühe, schwer SIDDH. K. 37, a. ÇĀK. 41, 10. निःसर्पे वद्धसर्पे वा भवने सुप्यते सुखम् । सदा दृष्टुमर्गं तु निद्रा डुःखेन लभ्यते || PAÑKĀT. III, 263. HIT. I, 152. VID. 192. डुःखडुःखेन mit grosser Mühe MEGH. 91. डुःखात् mit Mühe, schwer, schwerlich: चतुर्वर्ग-